ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 56-57
ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

दक्षिण भारत एवं विदेशों में हिंदी भाषा का स्वरूप

गुड़िया चौधरी
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरु नानक महाविद्यालय, वेलाचेर्री, चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 06.07.2018, Revised- 10.07.2018, Accepted - 15.07.2018 E-mail: guriachoudhary2010@gmail.com

सारांश : **भाषा उन महत्वपूर्ण इकाइयों में से एक है जो मानव जाति को एक सूत्र में पिरो कर रखती है भाषा विचारों के आदान प्रदान का माध्यम होती है। भाषा के स्वरुप का निर्धारण मानव समाज द्वारा होता है। मनुष्य एवं समाज की पहचान भाषा से होती है। भाषा जितनी सरल सुबोध और सहज होगी संप्रेषण भाव उतना ही सफल और सशक्त होगा।**

प्राचीन काल से ही भारत वर्ष बहुभाषी महान देश रहा है। भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषाएं बोली जाती है अर्थात कभी भी इसका भौगोलिक इकाई भू–भाग एक भाषा नहीं रहा है। इसी प्रकार भारतीय अन्य भाषाएं किसी एक प्रदेश तक भौगोलिक दृष्टि से सीमित नहीं रही है और इन भारतीय भाषाओं में हिंदी का एक महत्वपूर्ण स्थान है जो भारत वर्ष में करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाती है हिंदी भाषा भारत की आत्मा है।

कुंजी शब्द – विचारों, स्वरूप, बहुभाषी, भौगोलिक, भाषाओं, हिंदीत्तर, विशिष्ट, साहित्य सम्मेलन, प्रचार–प्रसार।

हिंदी भाषा का यह सौभाग्य है कि दक्षिण भारत में भी हिंदी भाषा आम जनमानस को आकर्षित करती आ रही है "भारत के विभिन्न हिंदीत्तर प्रदेशों में प्राचीन काल से ही हिंदी ने भाषा और साहित्य के संवर्धन में विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण योगदान दिया"।1 दक्षिण भारत में हिंदी तृतीय भाषा के रूप में कुछ अपवादों को छोड़कर सर्वत्र पढ़ाई जाती हैद्य दक्षिण भारत ऐसे राज्यों का समूह है जिसे देवों की भूमि के रूप में जाना जाता है। यह सदियों से धर्म और संस्कृति का केंद्र रहा है। यहां के तीर्थ स्थानों में वर्षों पूर्व हिंदी का प्रवेश हो गया था तथा प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक विनिमय के रूप में दक्षिण भारत के भक्त साधु संत उत्तर भारत के तीर्थ स्थलों में जाते थे और उत्तर भारत से भक्तगण, साधु– संत दक्षिण भारत आया करते थे। ऐसे में यह कहना सही प्रतीत होता हैं कि–

"भक्ति द्राविड़ उपजी लाये रामानंद
प्रकट कियों कबीर ने , सप्त द्वीप नौ खण्ड।"

अर्थात् जिस प्रकार भक्ति का आविर्भाव दक्षिण भारत में हुआ और रामानंद जी ने इस भक्ति को उतर भारत तक पहुँचाया एवं उनके शिष्य कबीरदास ने इस भक्ति को सप्त द्वीप,नौ खण्ड में फैलाया। इन संतो ने न सिर्फ भक्ति की भावना का प्रचार–प्रसार किया बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में भी इनका महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। प्राचीन काल से लेकर मध्य युग में उत्तर–दक्षिण के बीच व्यापार का प्रमुख माध्यम हिंदी भाषा ही थी। तमिलनाडु की भाषा द्रविड़ कुल की तमिल भाषा है किंतु यहां हिंदी का प्रचार सदियों पूर्व से चलता आ रहा है "हिंदी को भारत की राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में अपनाने के रूप में राष्ट्रपिता 'महात्मा गांधी' जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार प्रसार करने के लिए सन 1915 में महात्मा गांधी जी द्वारा हिंदी साहित्य सम्मेलन की शाखा के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की घोषणा की गई। सन 1918 को गांधी जी ने अपने जेष्ठ पुत्र देवदास गांधी (प्रथम प्रचारक) को मद्रास भेजा और 12 मई 1918 को मद्रास के जॉर्ज टाउन में प्रथम हिंदी वर्ग का प्रारंभ हुआ।"2 इसी के साथ अन्य हिंदी प्रचारकों ने भी हिंदी का प्रसार प्रचार किया जिससे तमिलनाडु के नागरिक अच्छी तरह हिंदी सीख गए तो बाद में तमिलों ने भी हिंदी के प्रसार प्रचार में योगदान दिया।

आम जनता में हिंदी के प्रति अभिरुचि बढ़ने के कारण आज भी हिंदी के प्रचार–प्रसार में तमिलनाडु के नागरिको का सहयोग प्राप्त हो रहा है वे अपने बच्चों को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के माध्यम से हिन्दी का ज्ञान दिला रहे है। हिंदी विरोध की भावना उनके मन से कम होती जा रही है वर्तमान समय में त्रिभाषा सूत्र का विरोध केवल दक्षिण भारत के राजनेताओ ने किया, जबकि आम जनमानस इसके पक्षमें ही है। वर्तमान में केंद्र सरकार के त्रिभाषा सूत्र के प्रयोग को दक्षिण के नेता गण भली भांति न समझने के कारण गलत फहमियों को फैला कर, हिंदी विरोध का विगुल बजा रहे है। "तमिलनाडु के शिक्षित पीढ़ी गत 18 सालो से नौकरी–पेशे के लिए उतर भारत में नहीं जा पर रही है। उनके माता–पिता इस सत्य को समझ गये है। अतः वे बड़ी संख्या में अपने बच्चो को हिंदी की परीक्षाओं में बैठने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है। इस सत्य को मानकर ही डी.एम.के सरकार के बड़े–बड़े अधिकारी आम जनमानस से छिपाकर अपने बच्चो को हिंदी सिखा रहे हैं। तमिलनाडु की बुद्धिमान जनता आज स्कूल से बाहर

अनुरूपी लेखक

अधिकाधिक हिंदी सीख रही है या डीएमके सरकार की हिंदी विरोधी नीति का मुंहतोड़ जवाब हैद्य"3 आश्चर्य की बात यह है कि तमिलनाडु के डी.एम.के सरकार के हिंदी विरोधी होते हुए भी 2019 के लोकसभा चुनाव का प्रचार पुस्तिका और विज्ञापन हिंदी भाषा में भी छपा हुआ था इससे स्पष्ट होता है कि तमिलनाडु में उत्तरोत्तर हिंदी का प्रचार–प्रसार बढ़ता जा रहा है।

तमिलनाडु के प्रायः सभी विद्यालयों में अंत महाविद्यालयी प्रतियोगिताएं कराई जाती है जिसमें अहिंदी विद्यार्थियों का न सिर्फ बढ़–चढ़ कर प्रतिभागियों के रूप में हिस्सा लेते हैं बल्कि पुरस्कारित भी होते हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार में इन अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं का महत्वपूर्ण स्थान है कुछ महाविद्यालयों में हिंदी से संबंधित अतिरिक्त कक्षाएं चलाई जाती है जिसमें विद्यार्थियों को जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है। उन्हें हिंदी सिखाई जाती है उदाहरण स्वरूप 'गुरुनानक महाविद्यालय' में हिंदी एसोसिएशन "ओस एक बूंद" के तहत दस दिनों का 'परिचय' नामक कार्यक्रम चलाया जाता है जिसमें प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष के विद्यार्थी हिंदी सीखने आते हैं। इसके माध्यम से वे न सिर्फ बोलना सीखते हैं बल्कि उन्हें लिखना भी सिखाया जाता है।

हिंदी विश्व के 30 से अधिक देशों में पढ़ी पढ़ाई जा रही है। लगभग 100 से अधिक विश्वविद्यालय संस्थानों में हिंदी के लिए अध्ययन अध्यापन केंद्र है। विश्व में जहां भी भारतीय मूल के निवासी हैं वहां किसी न किसी रूप में राजभाषा, भाषा संस्कार की भाषा के रूप में हिंदी विद्यमान है, जैसे मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गाना इत्यादि। हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए गगनांचल पत्रिका के संपादक श्री कन्हैयालाल नंदन अपने संपादकीय में लिखते हैं "पिछले दिनों विश्व की एकस्तरीय और अंतरराष्ट्रीय संस्था ने हिंदी के अनेक रचनाकारों की कालजई कृतियों के अनुवाद प्रकाशित करके अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी की अंर्तराष्ट्रीयता को प्रमाणित किया है।"4 अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की वर्तमान स्थिति उत्तरोत्तर मजबूत होती जा रही है भले ही इस का अतीत काफी संघर्षमय रहा परंतु भविष्य उत्साहवर्धक लगता है। वर्तमान समय में भारत विश्व के पटल पर एक बहुत बड़ा व्यवसायिक बाजार के रूप में उभरने के कारण से भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की कूटनीतिक प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होने से हिंदी के विस्तार का द्वार खुलता हुआ प्रतीत होता हैद्य हिंदी को विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठीया और सम्मेलनों का भी योगदान अमूल्य रहा है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा और विदेश मंत्रालय भारत सरकार संयोजन करता के सहयोग से प्रत्येक 3 वर्षों में हिंदी विश्व सम्मेलन का आयोजन विदेश में किया जाता है। सन 1918 में विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति का आयोजन स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय सभा केंद्र पाई मारीशस में हुआ जो हिंदी के प्रचार प्रसार में अद्‌भुत योगदान देता है।

विश्व पटल पर हिंदी का विस्तार तो हुआ है लेकिन इसे अपने ही देश में राज्य भाषा का दर्जा के लिए आजादी के बाद से वर्तमान तक संघर्षरत है। वर्ष 2019 में दक्षिण भारत के राजनेताओं ने हिंदी के विरोध में एक बार फिर बिगुल बजाया और हिंदी के प्रति कुछ राज्यों की उदासीनता का भाव भी हिंदी के प्रचार प्रसार का अवनति के लिए जिम्मेदार है।

निष्कर्षत– उपरोक्त बिंदुओं को देखते हुए मैं यही कहना चाहूंगी कि किसी भी देश का संपूर्ण विकास तब संभव हो सकता है जब वहां की जनता कूप मंडूकता से बाहर आकर सोचे, अर्थात व्यापक रूप में। हिंदी सिर्फ एक जाति विशेष की या राज्य की भाषा नहीं बल्कि संपूर्णरूप से भारत की भाषा है। लेकिन कुछ लोगों के स्वार्थ सिद्ध नीतियों का शिकार हिंदी के साथ–साथ आम जनता भी बन रही है जो कि ना तो राष्ट्रीय हित के लिए सही है और ना ही समाज के विकास के लिए। भारतेंदु जी ने सही ही कहा है .

"भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात
विविध देश मतहू विविध, भाषा विविध लखात।"

जिस प्रकार विविधता के कारण एक मत सम्भव नहीं हो सकता हैं ठीक उसी प्रकार भाषा की विविधता के कारण समुचित दिशा में विकास सम्भव नहीं होगा। ऐसे में हम अपना विकास एवं देश का विकास अपनी निज भाषा के आधार पर ही कर सकते हैं। न की किसी उधार की भाषा को लेकर अर्थात् हमारी उन्नति का मूल भी यही है और हमारे हृदय के कष्टों का निवारण भी हमारी अपनी भाषा हिंदी ही है। इसलिए भारतेंदु जी ने सही ही कहा है ."निज भाषा उन्नति अहै ,सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा रजत जयंती ग्रंथ (1962) पृष्ठ –3
2. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा शत्मानोत्सव–चेन्नई डायरी पृष्ठ –2
3. श्री पी. नारायण "नरन" दक्षिण हिन्दी आन्दोलन का इतिहास पृष्ठ –50

*****